प्रसारण : डिजिटल दूरी को कम करना

डॉ. दीपेंद्र कुमार मजूमदार
राष्ट्रीय प्रसारण और मल्टीमीडिया अकादमी
(NABM) दिल्ली

- **उपलब्धता :** क्या इंटरनेट एक्सेस पूरा देश में समान रूप से उपलब्ध है ?
- **लागत:** क्या वह एक्सेस सस्ती है ? यह किसी व्यक्ति की अन्य आवश्यकताओं की तुलना में कितना ज़रूरी हैं ? यह व्यय आय के कितना प्रतिशत है ?
- **सेवा की गुणवत्ता:** क्या अपलोड और डाउनलोड गति संतोषजनक है ?
- **प्रासंगिकता :** क्या स्थानीय स्तर पर इंटरनेट एक्सेस की प्रासंगिकता के प्रति, रुचि और समझ है ? क्या स्थानीय भाषा में और वह समुदाय के लोगों के लिए प्रासंगिक सामग्री है ?

डिजिटल अंतराल को घटाना

- सार्वजनिक सेवा प्रसारक हमारे मातृभूमि के भूगोल के 90% से अधिक क्षेत्र को कवर करता है और भारत की 97% से अधिक जनसंख्या इसे एक्सेस कर सकती है।
- सार्वजनिक सेवा प्रसारक सस्ती है।
- सार्वजनिक सेवा प्रसारक की विशेषता, विश्वसनीयता है (विपरीत: गलत जानकारी और भ्रामक जानकारी) और इसका सबसे बड़ा गुण समावेशी प्रसारण है (उदाहरण: दृष्टिहीन)।
- सार्वजनिक सेवा प्रसारक सामूहिक सार्वजनिक सेवा आंदोलनों की शुरुआत भी करता है। (स्वच्छ भारत अभियान, 2 अक्टूबर, 2014)

डिजिटल अंतराल को घटाना

- प्रसार भारती (पीबी), भारत का सार्वजनिक सेवा प्रसारक, प्रसार भारती अधिनियम 1990 के तहत स्थापित किया गया था और 23 नवंबर, 1997 को आधिकारिक रूप से अस्तित्व में आया।
- पीबी का ऑडियो विंग आकाशवाणी है और ऑडियो-विजुअल विंग दूरदर्शन है।
- आकाशवाणी के पास 482 प्रसारण स्टेशनों / केंद्रों और 652 ट्रांसमीटर हैं, जबकि दूरदर्शन के पास देशभर में 66 स्टूडियो और विभिन्न पावर के 635 स्थलीय ट्रांसमीटर हैं और यह फ्री-टू-एयर डीटीएच सेवा प्रदान करता है। (2020 का डेटा)
- आकाशवाणी का नारा है - *बहुजन हिताय, बहुजन सुखाय*, जबकि दूरदर्शन का नारा - *सत्यम शिवम सुंदरम* है।
- हमारी मातृभूमि के सार्वजनिक सेवा प्रसारक के तीन स्तंभ हैं – *सूचना, शिक्षा और मनोरंजन* ।

प्रसार भारती के उद्देश्य

- देश की एकता और अखंडता को बनाए रखना और संविधान में निहित मूल्यों की रक्षा करना।
- सार्वजनिक हित के सभी मामलों, राष्ट्रीय या अंतर्राष्ट्रीय पर नागरिकों के सूचना जानने के अधिकार की स्वतंत्र, और निष्पक्ष और संतुलित सूचना का प्रवाह प्रस्तुत करना, जिसमें विपरीत दृष्टिकोण भी शामिल हो, बिना किसी अपने मत या विचारधारा का प्रचार करना ।
- राष्ट्रीय एकता को बढ़ावा देना।
- शिक्षा और साक्षरता के प्रसार, कृषि, ग्रामीण विकास, पर्यावरण, स्वास्थ्य और परिवार कल्याण एवं विज्ञान और प्रौद्योगिकी के क्षेत्रों पर विशेष ध्यान देना।
- महिलाओं के समस्याओं / मुद्दों के बारे में जागरूकता पैदा करना और बच्चों, वृद्ध / बुजुर्ग लोगों और समाज के अन्य कमजोर वर्गों के अधिकारों की रक्षा के लिए विशेष कदम उठाना।
- विविध संस्कृतियों, खेलों, युवा मामलों को पर्याप्त प्रसार प्रदान करना।
- सामाजिक न्याय को बढ़ावा देना, श्रमिक वर्गों, अल्पसंख्यकों और जनजातीय समुदायों के अधिकारों की रक्षा करना।
- अनुसंधान को बढ़ावा देने और प्रसारण की सुविधाओं का विकास साधन करना।

जनसाधारण को शिक्षा प्रदान करना

- **लक्षित श्रोता / दर्शकों के लिये प्रयास :**

  स्कूल प्रसारण / दूरस्थ शिक्षा
  कृषि विद्‌यालय
  महिलाएं और बच्चे
  युवाओं के कार्यक्रम (विश्वविद्‌यालय प्रसारण)
  भाषा पाठ
  संगीत पाठ

- **सामान्य श्रोता / दर्शकों के लिये प्रयास:**

  स्वास्थ्य कार्यक्रम
  साहित्यिक कार्यक्रम
  संगीत कार्यक्रम
  डॉक्यूमेंट्रीज़ और फीचर्स
  मैगज़ीन कार्यक्रम

जनसाधारण को शिक्षा प्रदान करना

- **विशेष प्रयास :**

  विज्ञान प्रसारण

  खेल प्रसारण

  परिवार कल्याण कार्यक्रम

  चुनाव प्रसारण

  आपदा संबंधित

  ओबी कार्यक्रम (सहयोग)

  पटेल स्मारक व्याख्यान (31 अक्टूबर)

  डॉ. राजेंद्र प्रसाद स्मारक व्याख्यान (3 दिसंबर)

भारत की 22 अनुसूचित भाषाओं में प्रसारण

- **मन की बात : रेडियो पर एक सामाजिक क्रांति (3 अक्टूबर 2014, विजयदशमी)**

किसानों का सशक्तिकरण
सड़क सुरक्षा
जल संरक्षण / वर्षा जल संचयन
अंगदान
सैनिकों के लिए संदेश
परीक्षा का दबाव
भारत के पारंपरिक खेल
सतत भारतीय परंपराएँ और रिवाज
डिजिटल धोखाधड़ी

जनसाधारण को शिक्षा प्रदान करना

विभिन्न प्रकार के प्रसारण प्रारूप

- वार्ता
- साक्षात्कार
- चर्चा
- स्मृति कार्यक्रमों का लाइव कवरेज
- फोन-इन-कार्यक्रम
- रेडियो-ब्रिज कार्यक्रम
- समाचार
- रुपक और डॉक्यूमेंट्रीज़
- प्रश्नोत्तरी
- नाटक
- वाचन / सस्वर पाठ

असम का राज्य वृक्ष

साधारण नाम : होलोंग ; वानस्पतिक नाम : डिप्टेरोकार्पस मैक्रोकार्पस

सामाजिक शिक्षा पर केस स्टडी (फोकस: पर्यावरण संरक्षण)

- *ग्रीन ब्रॉडकास्टिंग / हरित प्रसारण (2004 – 2006)*
- *एड्स जागरूकता कार्यक्रम (2006)*
- *कोल्पोब्रिखो (सामाजिक वानिकी परियोजना) (1995)*
- *रेडियो के माध्यम से मत्स्य पालन को बढ़ावा देना (1994)*

आकाशवाणी डिब्रूगढ़, असम

- असम के एक गैर सरकारी संगठन – “ ***नेचर्स बेकन*** ” ने पाया कि अरुणाचल प्रदेश की सीमा से लगे असम के डिब्रूगढ़ और तिनसुकिया जिलों के पूर्वी छोर पर 500 वर्ग किलोमीटर का क्षेत्र अभी भी अपने मूल रूप में एक वर्षावन मौजूद है। यह गैर सरकारी संगठन 1996 से ही इसके संरक्षण और संवर्धन के बारे में लोगों में जागरूकता पैदा करने की कोशिश कर रहा है। यह राज्य सरकार से इस क्षेत्र को संरक्षित करने की मांग भी करता रहा है।

- गैर सरकारी संगठन – “ ***नेचर्स बेकन*** ” ने एक अनूठा कदम तब उठाया था, जब पहली बार 17 से 21 नवंबर 2001 तक डिब्रूगढ़ जिले में वर्षावन की सीमा से लगे जॉयपुर में इसके संरक्षण पर प्रकाश डालने के लिए **वर्षावन महोत्सव** का आयोजन किया था। (***असमिया प्रतिदिन**, 15 **जनवरी**, 2002*)

पर्यावरण संरक्षण आंदोलन, जिसे एनजीओ- '**नेचर बेकन**' ने विशेष रूप से असम के वर्षा-वनों के संरक्षण के लिए चलाया था, उसे आकाशवाणी डिब्रूगढ़ के पर्यावरण संरक्षण, वन्य-जीवन संरक्षण, वन संरक्षण, मानव-पशु (हाथी) संघर्ष, आर्द्रभूमि संरक्षण, संरक्षण के माध्यम से सतत विकास, संरक्षण के माध्यम से संघर्ष समाधान, पर्यावरण का प्रदूषण न होना और अन्य संबंधित मुद्दों पर कार्यक्रमों से बहुत समर्थन, प्रोत्साहन और बढ़ावा मिला था । यह सभी मुद्दों को **आकाशवाणी डिब्रूगढ़** के **ग्रीन ब्रॉडकास्टिंग** में प्रस्तुति के विभिन्न प्रारूपों में आकर्षक रूप से अपनाया गया था|

हमारी आबादी का एक बड़ा हिस्सा अभी भी ऐसा है जो साक्षर नहीं है, लेकिन समझदार और बुद्धिमान है, इसलिए वे पढ़ नहीं सकते लेकिन 'बोले गए शब्द' को अच्छी तरह समझ सकते हैं और उन तक पहुंचने का एकमात्र तरीका ऑडियो माध्यम है। इस प्रकार, जहां तक लोक सेवा प्रसारण का संबंध है, आकाशवाणी और दूरदर्शन उनके साथ संचार के एकमात्र चैनल हैं। लेकिन सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि जब तक इन 'गैर-साक्षर लेकिन समझदार' लोगों को साथ में नहीं लिया जाता, तब तक कोई सामाजिक परिवर्तन या सामाजिक-शैक्षणिक कल्याण संभव नहीं है।

अगर हम अपने श्रोताओं को अपने मिशन का हिस्सा बना सकें, तो निश्चित हैं कि, हमारा आधा उद्देश्य पूरा हो गया है। ग्रीन ब्रॉडकास्टिंग, इसके निर्माण में, असम विज्ञान प्रौद्योगिकी और शैक्षिक परिषद (एएसटीईसी), पर्यावरण और वन विभाग, असम सरकार, भारत सरकार के पर्यावरण मंत्रालय के उत्तर-पूर्व पर्यावरण अध्ययन केंद्र, (***अमार एक्सोम, 23 अगस्त, 2004***)

प्रयुक्त कार्यक्रम प्रारूपों की मेजबानी - ग्रीन ब्रॉडकास्टिंग

'ग्रीन ब्रॉडकास्टिंग' ने पर्यावरण और पर्यावरण संरक्षण के बारे में जागरूकता पैदा करने के लिए अपने मिशनरी कार्यक्रमों की प्रस्तुति के विभिन्न आकर्षक प्रारूपों को शामिल किया था, जैसे, फोन-इन कार्यक्रम, क्षेत्र आधारित टेलीकांफ्रेंसिंग और रोविंग माइक्रोफोन आदि।

2004 से 2006 तक प्रत्येक वर्ष जून के महीने में कुल 250 कार्यक्रम प्रसारित किए गए, जिनमें मंत्रियों, प्रशासकों, जनप्रतिनिधियों और सरकारी अधिकारियों के साक्षात्कारों के अलावा डॉक्यूमेंट्री, रुपक / फीचर्स, चर्चाएं, वार्ताएं, साक्षात्कार, विशेष रूप से निर्मित संगीत कार्यक्रम, वॉक्स पॉपुली और बच्चों के कार्यक्रम शामिल थे। (***जनसाधारण*, *29 मई, 2006***)

आकाशवाणी डिब्रूगढ़ के मुकुट में एक रत्न - ग्रीन ब्रॉडकास्टिंग

- नब्बे के दशक से ही आकाशवाणी डिब्रूगढ़ पर्यावरण संरक्षण के लिए प्रयासरत रहा है और **ग्रीन ब्रॉडकास्टिंग** / **हरित प्रसारण** के साथ यह अपने चरम पर पहुंच गया है। 5 जून को विश्व पर्यावरण दिवस की भावना के संयोजन में आकाशवाणी डिब्रूगढ़ ने जून महीने के दौरान अपने प्रसारणों को **हरित प्रसारण** के रूप में ब्रांड किया था। इस प्रकार उस महीने के दौरान आकाशवाणी डिब्रूगढ़ से प्रसारित सभी कार्यक्रम पर्यावरण संरक्षण की भावना से रंगे हुए थे। 2004 से 2006 तक लगातार तीन वर्षों तक जून के महीने में ऑल इंडिया रेडियो, डिब्रूगढ़ में 'हरित प्रसारण' जारी रहा।

- यह आकाशवाणी डिब्रूगढ़ की एक मिशनरी टीम का एक मौलिक और विशिष्ट प्रयास था, जिसमें **हरित प्रसारण** की अवधारणा का श्रेय श्री लोहित डेका, जो अब आकाशवाणी डिब्रूगढ़ के कार्यक्रम प्रमुख हैं और आकाशवाणी डिब्रूगढ़ के अन्य समर्पित प्रसारकों को जाता है ।

ग्रीन ब्रॉडकास्टिंग का खिलना

- आकाशवाणी डिब्रूगढ़ ने अपने अभियान के लिए एक वर्ष के लिए एक विशेष थीम अपनाई थी ; 2004 में **वर्षा वन संरक्षण** | 2005 में अपनाई गई थीम थी - **सामुदायिक संरक्षण**। 2006 में अपनाई गई थीम थी - **हूलॉक गिब्बन संरक्षण**।
- हरित प्रसारण में **हूलॉक गिब्बन** (भारत में पाई जाने वाली एशियाई बंदरों की एकमात्र प्रजाति) के संरक्षण के बारे में संदेश के समाहित होने के बाद, आज कोई भी गिब्बन को नहीं मारता है, और वास्तव में अगर कोई गिब्बन पर पत्थर फेंकता है, तो पत्थर, फेंकने वाले का पीछा करता है।

ग्रीन ब्रॉडकास्टिंग का विधा

- ग्रीन ब्रॉडकास्टिंग के दौरान एक विशेष प्रयास यह किया गया कि पर्यावरण संरक्षण से संबंधित कम से कम एक समाचार को स्थानीय समाचार बुलेटिनों में यथासंभव स्थान मिले।

- पर्यावरण संरक्षण की थीम के अनुरूप आकाशवाणी डिब्रूगढ़ द्‌वारा विशेष गीतों की रचना की गई और उन्हें उस अवधि के दौरान निर्मित और प्रसारित किया गया। वे बहुत लोकप्रिय भी हुए।

- ग्रीन ब्रॉडकास्टिंग के दौरान इस्तेमाल किए जाने वाले विभिन्न प्रारूपों में से रेडियो वोटिंग एक अभिनव प्रारूप था।

- रेडियो वोटिंग’ ने श्रोताओं को पर्यावरण संरक्षण जैसे सार्वजनिक हित के मुद्‌दों पर अपनी राय बताने की अनुमति दी।

ग्रीन ब्रॉडकास्टिंग पूरक

- ग्रीन ब्रॉडकास्टिंग ने लोगों को पर्यावरण से संपर्क करते समय क्या करना चाहिए और क्या नहीं करना चाहिए, इस बारे में भी शिक्षित किया। उन्होंने बताया कि जब वे पिकनिक पर जाते हैं या किसी भी कारण से अपने आस-पास के प्राकृतिक वातावरण या जंगलों में जाते हैं, तो उनकी क्या ज़िम्मेदारियाँ होती हैं। पिकनिक के बाद क्षेत्र की सफ़ाई पर विशेष रूप से ज़ोर दिया गया। जंगलों में जाते समय बरती जाने वाली सावधानियों के बारे में भी बताया गया।
- आकाशवाणी डिब्रूगढ़ के श्रोताओं को पर्यावरण संरक्षण के बारे में पहले की तुलना में कहीं अधिक जागरूक बनाया गया।
- आकाशवाणी डिब्रूगढ़ ने पर्यावरण के संरक्षण के लिए अन्य प्रत्यक्ष अभियानों और जनता के साथ आमने-सामने बातचीत के साथ 'ग्रीन ब्रॉडकास्टिंग' को पूरक बनाया था।

स्नेह से, अभी भी जीवित है – ग्रीन ब्रॉडकास्टिंग

आकाशवाणी डिब्रूगढ़ ने पर्यावरण संरक्षण और सतत विकास में अपने प्रयासों को पूरे वर्ष भर फैलाया है और पर्यावरण संरक्षण आज तक आकाशवाणी डिब्रूगढ़ के प्रसारणों का एक निश्चित / स्थायी विषय रहा है।

हर साल जून के महीने में, आकाशवाणी डिब्रूगढ़ अपने लगभग सभी कार्यक्रमों में पर्यावरण संरक्षण के बारे में बातचीत प्रसारण करता है। इसका मिशन जारी है, बस फर्क इतना है कि 2004 से 2006 के दौरान इसके अनूठे और स्मारकीय प्रयासों के सम्मान में अब ग्रीन ब्रॉडकास्टिंग के रूप में ब्रांडिंग नहीं की जाती है।

पर्यावरण संरक्षण पर प्रस्तुति के विभिन्न प्रारूप जैसे, डॉक्यूमेंट्री, रुपक / फीचर, चर्चाएं, वार्ता और साक्षात्कार, संगीत कार्यक्रम, वोक्स पॉपुली, बच्चों के कार्यक्रम, रेडियो वोटिंग, क्षेत्र आधारित टेलीकांफ्रेंसिंग और रोविंग माइक्रोफोन, इसके अलावा मंत्रियों, प्रशासकों, जनप्रतिनिधियों, अधिकारियों, वन-रक्षकों, वर्षा-वनों के किनारे रहने वाले ग्रामीणों के साक्षात्कार, जिनका उपयोग ग्रीन ब्रॉडकास्टिंग में किया गया, समाज के हर वर्ग और हर व्यक्ति के बीच पर्यावरण संरक्षण का संदेश प्रभावी ढंग से पहुंचाने में सफल रहे।

आकाशवाणी डिब्रूगढ़ का अपने श्रोता-जनता के साथ सीधा संपर्क, चाहे वह वर्षा वनों में बच्चों के साथ जंगल ट्रैकिंग हो या वर्षा वन महोत्सव में भागीदारी हो या सामुदायिक वृक्षारोपण कार्यक्रम / सामाजिक वानिकी कार्यक्रम या पृथ्वी महोत्सव में भागीदारी हो, जनता को आश्वस्त करता है कि, आकाशवाणी डिब्रूगढ़ ने सिर्फ अपने प्रसारण के साथ अपनी जिम्मेदारी समाप्त नहीं की है, बल्कि पर्यावरण संरक्षण गतिविधियों में इसकी आमने-सामने की भागीदारी ने दिखाया है कि यह वांछित परिणाम प्राप्त करने के लिए संचार के भागीदारी पद्धति में विश्वास करता है।

ग्रीन ब्रॉडकास्टिंग के प्रभाव का उदाहरण

"एक बार राज्य सरकार के एक अति उच्च पदस्थ अधिकारी धान के खेतों के समीप एक सड़क मार्ग से गुजर रहे थे। वहाँ पर चार 'गरुड़ सारस' (Greater Adjutant Storks) स्वाभाविक रूप से निवास कर रहे थे। अधिकारी महोदय सशस्त्र अंगरक्षकों एवं सुरक्षा दस्ते के साथ थे। मार्ग में उन्होंने अपना वाहन रुकवाया और उनमें से एक गरुड़ सारस को लक्ष्य कर गोली चला दी, जिससे वह तत्काल मृत हो गया।

उसी समय निकटवर्ती खेतों में दो युवक हल चला रहे थे। वे किसान थे, औपचारिक शिक्षा से वंचित किंतु आकाशवाणी डिब्रूगढ़ के नियमित श्रोता थे। जब उन्होंने देखा कि एक संरक्षित पक्षी को गोली मार दी गई है, तो वे अत्यंत आक्रोशित हो उठे और उन्होंने तीव्र स्वर में विरोध प्रकट किया। उनके शोरगुल को सुनकर समीपवर्ती गाँव के कई ग्रामीण वहाँ एकत्र हो गए।

ग्रामीणों ने उस अधिकारी को चारों ओर से घेर लिया और उससे प्रश्न किया कि उसने उस पक्षी को गोली क्यों मारी। अधिकारी ने उत्तर दिया कि उसने उसका शिकार किया है। इस पर ग्रामीणों ने स्पष्ट शब्दों में कहा कि उन्होंने आकाशवाणी डिब्रूगढ़ के कार्यक्रमों के माध्यम से यह जानकारी प्राप्त की है कि गरुड़ सारस सहित किसी भी वन्यजीव का शिकार करना भारतीय वन्यजीव संरक्षण अधिनियम के अंतर्गत निषिद्ध है। उन्होंने अधिकारी से प्रतिप्रश्न किया – 'क्या आपको यह ज्ञात नहीं ?'

यह प्रश्न सुनकर वह अधिकारी निरुत्तर रह गया।

तदुपरांत, उपस्थित जनसमूह ने उस अधिकारी को समीपवर्ती पुलिस चौकी तक पहुँचाया, जहाँ जनदबाव के कारण ड्यूटी पर तैनात पुलिस अधिकारी को कुछ समय के लिए उसे हिरासत में रखना पड़ा।"

यह प्रसंग इस बात का सजीव उदाहरण है कि किस प्रकार आकाशवाणी डिब्रूगढ़ द्वारा प्रसारित 'हरित प्रसारण' (Green Broadcasting) ने सामान्य जनता को पर्यावरणीय एवं वन्यजीव संरक्षण विषयक शिक्षा प्रदान की और उन्हें जागरूक नागरिक बनने की प्रेरणा दी।

"अर्थ फेस्टिवल, 2003" (जो कि आकाशवाणी डिब्रूगढ़ एवं 'नेचर'ज़ बेकन' के संयुक्त प्रयास से आयोजित हुआ था) का मुख्य उद्देश्य पर्यावरण संरक्षण एवं वर्षा-वन संरक्षण आंदोलन को आम जनता के और निकट लाना था। इसके अतिरिक्त, इस महोत्सव का एक अन्य उद्देश्य वर्षा-वनों के सीमावर्ती क्षेत्रों में निवास करने वाले जनसमुदाय की बहुरंगी सांस्कृतिक विरासत को प्रोत्साहन देना भी था।

वर्षा-वन संरक्षण आंदोलन ने एक अत्यंत सकारात्मक परिणाम तब दिया जब सरकार ने 13 जून 2004 को जारी राजपत्र अधिसूचना के माध्यम से जॉयडिहिंग वर्षावन के 111.19 वर्ग किलोमीटर क्षेत्र को 'दिहिंग पटकाई वन्यजीव अभयारण्य' घोषित करने का निर्णय लिया। तत्पश्चात, 13 दिसंबर 2020 को असम सरकार ने इसे राष्ट्रीय उद्यान के रूप में उन्नत किया, जिसे अब 'दिहिंग पटकाई राष्ट्रीय उद्यान' के नाम से जाना जाता है। इसके बाद, 9 जून 2021 को असम के वन विभाग ने इसे औपचारिक रूप से एक राष्ट्रीय उद्यान के रूप में संरक्षण की जिम्मेदारी संभाली।

ऐसा विश्वास किया जाता है कि वर्ष 2001 और 2003 में आयोजित वर्षा-वन महोत्सवों ने सरकार के इस ऐतिहासिक निर्णय को प्रभावित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

(स्रोत: दैनिक जनमभूमि, 4 फरवरी, 2013)

सामुदायिक वनरोपण अभियान – ग्रीन ब्रॉडकास्टिंग

जब पौधे उन लोगों की तुलना में बहुत लंबे हो गए, जिन्होंने उन्हें लगाया था

आकाशवाणी डिब्रूगढ़ के दो अधिकारी जिन्होंने ग्रीन ब्रॉडकास्टिंग
को क्रियान्वित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई

आकाशवाणी डिब्रूगढ़ के नेक प्रयास को अंतरराष्ट्रीय स्तर पर मान्यता मिली

GREEN BROADCASTING

by Dr. Dipendra Kumar Mazumder

Sensitising broadcasters about conservation of our environment, through appropriate training, has become a must today. The broadcasters, in turn, can then offer development support communication from their broadcasting organisations, to motivate their listening public to achieve results.

An illustration of this is the Green Broadcast of All India Radio's Dibrugarh Station, situated in the far eastern corner of the state of Assam, in India.

The listeners have been so motivated to plant trees in their neighbourhood by the Green Broadcast, which had been sustained with a missionary zeal by the broadcasters of that station, that today there are 20,000 more trees growing in the listening range of that radio station.

Broadcasters of any radio station can embark upon a similar endeavour from say, the World Environment Day and continue for a month, wherein interactive programmes to educate the listening public on the importance of conserving our fragile environment can be vigorously pursued, through different programming formats.

The broadcast must be so designed that the listeners are inspired to do their homework about how best to plant trees, and the listeners' efforts must be acknowledged in the Green Broadcast, say by incorporating OB Programmes in which the listeners who did the planting can be brought live into the programme from the plantation. The plantations can also be visited by the officials of the radio station. The Fan Club of the radio station can then take care to see that the listeners have actually been nurturing their plantation, well beyond their infancy, even after the Green Broadcast has finished its lifetime on air.

At the time of plantation

When the trees today have grown much taller than those who planted them

Since the time these broadcasts began, the trees in this area have now grown taller than the people who planted them. Radio Broadcasting can be very effective in making the only hospitable planet in our solar system a greener one, which has become a dire necessity today.

Dr. Mazumder is a Faculty Member with National Academy of Broadcasting and Multimedia, Prasar Bharati, India

3 Comments

"आप भी अपना उत्तरदायित्व निभाएँ, जिससे हमारी मातृभूमि अपनी शिक्षा व्यवस्था पर गर्व कर सके।"

डॉ. दीपेंद्र कुमार मजूमदार
राष्ट्रीय प्रसारण और मल्टीमीडिया अकादमी (NABM), दिल्ली

अपना ध्यान देने के लिए, आप सभी को धन्यवाद!